© INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH PUBLICATION & SEMINAR
ISSN: 2278-6848 | Volume: 08 Issue: 02 | January - March 2017
Paper is available at www.jrps.in | Email : info@jrps.in

# साहित्यिक परिस्थितियों में नारी (20वीं सदी के विशेष संदर्भ में)

सुनीता रानी, शोधार्थी एन.आई.आई.एल.एम. विश्वविद्यालय कैथल (हरियाणा)

ISSN : 2278-6848 03
9 772278 684800
© International Journal for Research Publication and Seminar

आधुनिक काल को कई उपविभागों में विभक्त किया गया है। डॉ० नगेन्द्रानुसार ये उपविभाग निम्नवत हैं–

1. पुनर्जागरण काल (भारतेन्दु युग) 1857–1900 ई.
2. जागरण सुधार काल (द्विवेदी युग) 1900 ई.–1918 ई.
3. छायावादी युग (1918–1938ई.)
4. छायावादोत्तर काल (1918–1938ई.)

(अ) प्रगति प्रयोगकाल (1938ई. से 1953 ई.)

(ब) नवलेखन काल (1953 ई.....)

नवलेखन काल की समय–सीमा 1954 ई. से 1972 ई. तक मानी गई है। तत्पश्चात अद्यतन लेखन काल प्रारम्भ हुआ जिसे 1973 से वर्तमान तक माना जा सकता है।

महिला साहित्यकारों ने नवलेखन काल समय में सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक परिस्थितियों का वर्णन अपनी रचनाओं में किया जिससे समाज में नई चेतना की जागृति का उत्पात हुआ। महिला साहित्यकारों में सर्वप्रथम महादेवी वर्मा का नाम प्रसिद्ध है। महादेवी के काव्य में प्रेम वेदना की गहनता प्रचुर मात्रा में मिलती है। वेदना उन्हें इतनी प्रिय है कि वे उसका साथ नहीं छोड़ना चाहती क्योंकि इसी वेदना के माध्यम से उन्होंने सर्वशक्तिमान चेतनामय ईश्वर का दर्शन किया। यथा–

''मेरे बिखरे प्राणों में सारी करूणा ढुलका दो,
मेरी छोटी सीमा में अपना अस्तित्व मिटा दो।।
पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूढ़ा, तुम में ढूढूगी पीड़ा।।''

**Note :For Complete paper/article please contact us info@jrps.in**

**Please don't forget to mention reference number , volume number, issue number, name of the authors and title of the paper**